

**स्वयंसेविका स्त्री.** (तत्.) 1. वह स्त्री जो कोई वेतन लिए बिना स्वेच्छा प्रसन्न मन से सेवा का कार्य करती हो 2. किसी स्वयंसेवी संस्था की सदस्या।

**स्वयंसेवी पुं.** (तत्.) स्वयंसेवक।

**स्वयमर्जित पुं.** (तत्.) अपने आप अर्जित किया हुआ धन या संपत्ति, स्वयं की कमाई।

**स्वयमागत वि.** (तत्.) 1. अपने आप आया हुआ अर्थात् बिना बुलाए या सूचना दिए जो आया हो 2. किसी बात पर बिना किसी के कहे दखल देने वाला।

**स्वयमुक्ति पुं.** (तत्.) ऐसा साक्षी या गवाह जो वादी या प्रतिवादी के बिना बुलाए स्वयं ही आकर किसी घटना या व्यवहार के संबंध में कुछ बोले या बताए।

**स्वयमुदित वि.** (तत्.) जिसका अपने आप उदय हुआ हो।

**स्वयमुपगत पुं.** (तत्.) वह व्यक्ति जो स्वयं की इच्छा से किसी का दास हो गया हो।

**स्वयमेव अव्य.** (तत्.) अपने आप ही, आप ही, खुद ही।

**स्वयोनि वि.** (तत्.) जो अपनी उत्पत्ति का कारण स्वयं हो, स्वयं की उत्पत्ति का उद्गम आप ही हो।

**स्वर पुं.** (तत्.स्वर) 1. स्वर्ग 2. परलोक 3. आकाश।

**स्वर पुं.** (तत्.) 1. वह शब्द या आवाज जो प्राणियों के कंठ या एक वस्तु पर, दूसरी वस्तु का आघात पड़ने से निकलती है आवाज, कंठध्वनि 2. वर्णमाला की दृष्टि से वे वर्ण जो बिना किसी वर्ण की सहायता से उच्चरित होते हैं 3. संगीत के सात स्वरों षड्ज, ऋषभ आदि में से एक 4. श्वास 5. उच्चारण में स्पंदन की मात्रा 6. स्वरित के रूप में।

**स्वरकंप पुं.** (तत्.) स्वर का कंपन, हिलना, गले से स्वर या आवाज का स्पष्ट न निकल पाना।

**स्वरकर पुं.** (तत्.) वह पदार्थ या रसायन जिसके सेवन से बँधा गला खुल जाता है तथा गले का स्वर मधुर एवं सुरीला हो जाता है वि. गले को खोलने वाला, स्वर को सुरीला बनाने वाला, स्वर उत्पन्न करने वाला।

**स्वरकलानिधि स्त्री.** (तत्.) कर्नाटकीय पद्धति की संगीत विधा में एक रागिनी।

**स्वरक्षय पुं.** (तत्.) स्वर की हानि, स्वर भंग।

**स्वरक्षयन पुं.** (तत्.) मनो. 1. कंठ स्वर का क्षीण हो जाना 2. आवाज हल्की होना।

**स्वरक्षा स्त्री.** (तत्.) किसी प्रकार के आक्रमण, आतंक, शत्रु आदि से स्वयं या अपने आप की जाने वाली आत्मरक्षा। self defence

**स्वरक्षु स्त्री.** (तत्.) वक्षु महानदी का एक नाम।

**स्वरग पुं.** (तत्.) स्वर्ग।

**स्वरग्राम पुं.** (तत्.) संगीत के सातों स्वरों (सा, गा, मा....नि) का समूह, सप्तक।

**स्वरघ्न पुं.** (तत्.) सुश्रुत के अनुसार वायु के प्रकोप से होने वाला कंठ/गले का एक रोग जिससे गले से आवाज ठीक नहीं निकलती, गला बैठने का रोग।

**स्वरज्ञान पुं.** (तत्.) 1. स्वरों का ज्ञान 2. संगीत किसी भी क्षण कंठ से स्वर निकालने या किसी भी स्वर को सुनते ही उसे जान लेने की क्षमता।

**स्वरतंत्री स्त्री.** (तत्.) गले और छाती के अंदर का वह अंग जो सूत्र के आकार का होता है तथा जिसकी सहायता से ही गले से आवाज निकलती है, स्वरसूत्र। vocal card

**स्वरता स्त्री.** (तत्.) 1. स्वर होने का भाव 2. स्वरित होने की अवस्था या भाव।

**स्वरतान पुं.** (तत्.) तान का वह प्रकार जिसका स्वर समूह बिना वाणी के केवल ध्वनि के आश्रय से उच्चरित होता है।

**स्वरति स्त्री.** (तत्.) मनो. किसी अन्य व्यक्ति के बिना केवल स्वयं की विचारानुभूति या अन्य कार्यों के द्वारा काम भावना जगाकर संतुष्ट